॥ श्रीशान्तिनाथाय नमः

भट्टारक चर्चा

...ख्यातस्सुयशःकीर्तिः, पुरा भट्टारको वशी ।
...य नाम्ना प्रसिद्धस्य, शोचनीया गुणास्तव ॥ १॥
...णास्सर्वत्र पूज्यन्ते, पितृवंशो निरर्थकः ।
...सिंहपुरा जैनाः भवेयुर्गुणग्राहिणः ॥२॥

लेखक व प्रकाशक

मन्त्री

श्री दिगम्बर जैन नरसिंहपुरा नवयुवक मण्डल, भींडर (मेवाड़)

प्रतियाँ	ता० १८-१०-४१	मिथ्यात्व वमन
		या
१०००	भींडर (मेवाड़)	सदुपयोग

प्रकाशकीय निवेदन

प्रिय बन्धुओ ! यह छोटा-सा ट्रेक्ट आप के कर कमलों में समर्पित है। इसमें यदि कहीं पर कुछ अशुद्धियाँ रहगई हो तो पाठक शुद्ध कर के पढ़ेंगे ऐसी आशा है।

इस पुस्तक के लिखने में व प्रकाशन करने में हमारा कोई निजी स्वार्थ व कषाय-भाव नहीं है, केवल यही इच्छा है कि किसी तरह इस जाति की उन्नति हो।

जो कविताएँ इसमें दी गई हैं उनको प्राप्त करने में हमें बहुत ही कष्ट उठाना पड़ा है, कारण कि कविताएँ भट्टारक जी महाराज व पञ्चों के पास तथा अन्य कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पास थीं सो मूल प्रतियाँ नहीं देकर उन्होंने नकल देने की जो अनुकम्पा की है उसके उपलक्ष्य में हम उनके पूर्ण आभारी हैं तथा साथ में कोटिशः धन्यवाद भी देते हैं।

हम सब से अधिक धन्यवाद उन अजैन विद्वान महोदय को देते हैं कि जिन्होंने बिना किसी भेंट व पुरस्कार के इस पुस्तक के लिखने में पूर्ण समय प्रदान कर इस कार्य को अन्त तक पहुँचाया है।

साथ में इस पुस्तक के प्रकाशित करने में जिन-जिन महाशयों ने आर्थिक सहायता दी है उनको भी धन्यवाद देते हैं।

इस पुस्तक को पढ़ कर या सुन कर कोई भी भाई व भट्टारक जी महाराज किसी भी प्रकार की कषाय न करें किन्तु अपना अभिमत समाज के सामने अवश्य रक्खेंगे। समाज खुद ही यथार्थ व अयथार्थ का निर्णय कर लेगी ऐसी प्रार्थना है।

निवेदक

—मन्त्री

श्रीमहावीरायनमः

भट्टारक चर्चा

भट्टारक जसकीर्ति सा० सोचें और नरसिंहपुरा दिगम्बर जैन समाज ध्यान दे —

प्रिय परीक्षा-प्रधानी बन्धुओ ! यह आप लोगों से अपरिचित नहीं है कि भट्टारकों की स्थापना मुग़ल शासनकाल में हुई जब कि दुनियाँ चारित्रक चमत्कार को ही सर्वोपरि समझती थी। उस समय में भट्टारकों द्वारा समाज व धर्म की जो अपूर्व सेवाएँ हुई थीं उसे कृतज्ञ समाज कभी भूल नहीं सकती। संसार में समय के साथ सबमें परिवर्तन होता है तदनुसार हमारे इन भट्टारकों में भी परिवर्तन हुआ और वह भी यहाँ तक कि वे चारित्र्यशून्य केवल नाममात्र ही भट्टारक रह गये जिनको जनता भक्तिपूर्वक भोजन व भेंट देती थी किन्तु अधुना यह बात नहीं है ये लोग भी अपने कर्त्तव्य से इतने च्युत हुए है कि जो द्रव्य श्रावक गण अपनी समाज व धर्म की रक्षा के निमित्त देती है उसको अपने स्वार्थ साधन मे खर्च कर उसका शतांश भी समाज हित में नहीं खर्च करते हैं।

फलतः समाज के कुछ शिक्षित व्यक्तियों की दृष्टि इनकी ओर से फिरी और उन्होंने समय २ पर समाज को जाग्रत किया।

अन्य प्रान्तों में तो भट्टारकों का जोरशोर कम हो गया किन्तु मेवाड़ वागड़ व गुजरात में ज्यों का त्यों चला आरहा है।

कभी किसी भाई ने इनके विरुद्ध कोई चर्चा उठाई तो समाजका इतना दबाव पड़ा कि उसको चुप्पी साधनी पड़ी।

हम नरसिंहपुरा जाति बन्धुओं के साथ भी भट्टारक जशःकीर्ति जी का सम्बंध है। आप नरसिंहपुराओं के भट्टारक कहलाते हैं और प्रति वर्ष सैंकड़ों रुपये भेंट, पछेवड़ी, कान फूँकाई, आदि के नाम से वसूल करते हैं किन्तु वह पैसा किस जगह और कैसे खर्च किया जाता है यह बात जातीय बन्धुओं से अज्ञात रक्खी जाती है अभी तक भट्टारक संस्था की ओर से कोई भी हिसाब प्रकट नहीं किया गया।

वैसे तो किसी का साहस भी नहीं होता कि यह हिसाब पूछे क्योंकि पञ्चगण उनकी पीठ हमेशा ठोकते हैं। यदि कभी दोचार साहसी पुरुषों ने उनसे पूछने की हिम्मत की तो उनसे पहले उनके पिट्ठू (जो प्रत्येक गाँव में दोचार रहते ही हैं) उनसे पहले बोल उठते हैं और समाज में बखेड़ा करने को तैयार हो जाते हैं।

किन्तु समाज के उन मुखियाओं से मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे शान्ति से विचार करें कि क्या वे हमारे धर्म–गुरु हैं या जाति-गुरु ?

मैं इस समय अधिक प्रमाण नहीं देकर सर्वमान्य आचार्य प्रवर समन्त भद्र स्वामी का फर्माया हुआ प्रमाण ही पर्याप्त समझता हूँ उन्होंने धर्म गुरु का कैसा सुन्दर लक्षण प्रतिपादित किया है।

श्लोक

विषयाशावशातीतां, निरारम्भोऽपरिग्रहः।

ज्ञान ध्यान तपो रक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते ॥ १ ॥

अर्थ— जो पंचेन्द्रियों के विषयों की आशा से व आरम्भ परिग्रह से रहित हैं तथा ज्ञान ध्यान और तप में जो लीन है वही तपस्वी साधु गुरु प्रशंसा के योग्य हैं।

अब आप ही सोचें कि क्या यह लक्षण इनमें घटित होता है।

हमारे आचार्यों ने दो प्रकार से धर्म का प्ररूपण किया है (१) श्रावक धर्म (२) मुनि-धर्म

मुनि धर्म तो इन में नाम मात्र को भी नहीं है क्योंकि इनमें गृहस्थ से भी कहीं अधिक परिग्रह व लालसा है।

अब रही श्रावक धर्म की बात जो भी विचार करने पर सिवाय शून्यता के कुछ भी दृष्टि-पथ नहीं होता।

क्योंकि श्रावक-धर्म के ११ प्रतिमाएँ व दर्जे निश्चित किए हैं।

सो उनमें से किसी भी दर्जे वालों से इनका मिलान नहीं खाता है। क्योंकि इतना आरम्भ परिग्रह रख कर पात्र में मुनि वत् भोजन करना तथा चतुर्मास में नग्न होकर वस्त्र पहिनना शिखा (चोटी)

व यज्ञोपवीत का नहीं रखना, बिना छने पानी में कपड़े धुलाना तथा हरि घास पर चलना सचित्त जल से नहाना तथा नग्न दिगम्बर गुरुवत् अपने को" नमोऽस्तु" कहलाना व अष्ट द्रव्य से पूजा कराना किसी भी शास्त्र में दृष्टि पथ नहीं होना। तथा ग्यारह प्रतिमाओं में से भी किसी भी प्रतिमा वालों के ऐसा समुदाय रूप कार्य नहीं होता है।

अतः यह निश्चित है कि इनके न तो मुनि धर्म है और न श्रावक धर्म विशेष क्या? खेद है कि अष्ट मूल गुण भी निर्दोष नहीं किन्तु फिर भी हमारे जाति बन्धु अपने नेत्रों को बन्द करके खुद भी इन को पूजते है और दूसरों को भी पुजवाते हैं तथा नहीं पूजने पर उनको जाति बहिष्कार का डर दिखाते है।

कितने ही बन्धु यह कहते हैं कि ये धर्म गुरु तो नहीं हैं। किन्तु जाति गुरु गृहस्थाचार्य व जाति के राजा हैं।

(१) मेरी उनसे भी यह नम्र प्रार्थना है कि क्या राजा व गृहस्थाचार्य कभी जिन प्रतिमा के सामने नग्न होकर पुनः वस्त्र पहिनता है ?

(२) राजा की भी किसी समय में नग्न दिगम्बर गुरुवत् पूजा नमस्कार व कर पात्र में भोजन आदि हुवा है ?

(३) क्या किसी शास्त्र में इनके लिए शिखा व यज्ञोपवीत का अभाव लिखा है ?

किन्तु प्रत्येक पहलू से विचार करने पर भी हमको विश्रान्ति नहीं मिलती है। हम पाठकों को यह भी निवेदन करदेना उचित

समझते हैं कि जो सच्चे देव शास्त्र गुरु के भक्त हैं। उन्हे कभी भी जबरन नमस्कार के लिये बाध्य नहीं करे। क्योंकि कुंदकुंद स्वामी के यह वचन हैं।

जे दंसणेसु भट्ठा णाणे भट्ठाचरित्ते भट्ठाय।
एदे भट्ट विभट्टा से संवि जणं विणासन्ति ॥ १ ॥
जं दंसणेस भट्ठा पाए पाड़न्ति दंसण धराणं।
ते हुंति लुल्ल मूया बोही पुण दुल्लहा तेसिं ॥ २ ॥

अर्थ—जो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र से भ्रष्ट हैं वे भ्रष्ट से भी भ्रष्ट हैं जो खुद तो सम्यग्दर्शन से रहित हैं किन्तु अन्य सम्यग्दृष्टियों को जबरन पावों मे गिराते हैं वे मर कर लूले गूगे बहरे आदि होते हैं ? अतः भाइयो आगम की तरफ ध्यान दो आँख खोलकर देखो कि हमारे शास्त्र क्या कह रहे हैं। आगम को अलग रखकर बाप दादाओं की रूढि पर चलना अपने को नरक निगोद मे गिराना है।

जो कोई जानते हुए तथा समझते हुवे भी नमस्कार करते हैं सो उनके लिए भी भगवान कुंदकुंद की यही आज्ञा है।

गाथा

जेपि पडन्ति च तेसिं जाणन्ता लज्जा गारवभएण।
तेसिं णत्थि बोही पावं अणुमो माणाणं ॥ ३ ॥

अर्थ-जो जानता हुआ भी लज्जा, भय और गौरव से नमस्कार करता है वह भी लूला गूँगा आदि होता है।

प्राचीन आचार्यों ने तो भट्टारकोंका निम्न लिखित लक्षण किया है।

सर्व शास्त्र कलाभिज्ञो नानागच्छाभिवर्द्धकः।

महातपा प्रभा भावी भट्टारक इतीष्यते ॥ ४ ॥

अर्थ-सर्व शास्त्र कलाओं को जानने वाले अनेक धर्म के रक्षक गच्छों (मुनि सन्घों) की वृद्धि करने वाले तथा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र्यादि गुणों से परिपूर्ण होने के कारण प्रभावशाली महात्मा रूप के धारक भट्टारक कहे जाते हैं।

दिगम्बर मुनि रूपको धारण करने वाले धर्म की मूर्ति जिनको देखकर जीवों पर एकदम बिना उपदेश दिए ही प्रभाव पड़ जावे और जिनके चहरे पर अकारण बन्धुता झलकती हो, जो पञ्चेन्द्रिय विजयी हो, आत्म गुणको विघातक रागद्वेषको तिलांजलि देने वाले शत्रु मित्र महल मसान अर्थ उतारने वाले व तलवार से मारने वाले में समता भाव धारण करनेवाले तथा रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र्यादि गुणों से विशुद्ध, परके उपकारक एसे तपस्वी भट्टारक कहलाते है ऐसा भट्टारक पद होता है उनके अनेक गच्छ होते है किन्तु उस पद पाने का अधिकार श्रेष्ठ दिगम्बर मुनिपना होने पर ही हो सकता है।

क्योंकि समस्त भट्टारक नग्न दिगम्बर ही होते थे, पुलाक

पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ, स्नातक ये पाँचों मुनि निर्ग्रन्थ ही होते हैं, कोई पुलाक का दुरुपयोग कर व अर्थ का अनर्थ कर अपने को पुलाक बताते हैं, परन्तु पुलाक की व्याख्या निम्न प्रकार है।

श्री आ० पू० पाद कृत सर्वा० सि० टी० में बताया है।

उत्तर गुणभावनोपतमनसोव्रतस्वपिकचचित्कदा चित्परिपूर्णतामपरिप्राप्नुवन्तोऽविशुद्धाःपुलाकसादृश्यात पुलाका इत्युच्यन्ते ॥

अर्थात्—उत्तर गुणों की भावना से रहित तथा मूल गुणों में भी किसी समय द्रव्य, क्षेत्र, काल के प्रभाव से परिपूर्ण न हो सके–अर्थात् दोष आजावे तो उस अपेक्षा वह विशुद्धता रहित होता है। उसको तुपयुक्त धान्य के सदृश पुलाक कहा है।

परन्तु यह उत्तर गुण तो दूर हैं। मूल गुणों का भी नाम ही नहीं फिर वहाँ दोषों का क्या विचार ? इसलिये पुलाक वगैरह किन्हीं मुनियों में इनका अन्तर्भाव नहीं हो सकता किसी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रकार से सामान्य जैनी व सहधर्मी कहना ठीक ही पड़ता है। अतः सहधर्मियों के सदृश आदर करना चाहिये और इतना ही उन्हें करवाना चाहिये। अन्यथा उपास्य व उपासक दोनों की आत्मा पूर्ण पतित होती है, अतः दोनों की हित दृष्टि से शास्त्रोक्त विवेचन किया है इसे द्वेष न समझें।

पाठक इतने मात्र से ही भलीभाँति जान गये होंगे कि इनके लिये शास्त्रों में कैसी आज्ञा है अर्थात् इनको किसी अपेक्षा

सहधर्मी कहना चाहिये इन्हें खुद भी अपने को यही पुकारना चाहिये।

यही कारण है कि अब समाज इनकी पूजा नहीं करना चाहती क्योंकि लोगो ने अब शास्त्र पढ़ना प्रारम्भ करदिया है फलतः अब वे जहाँ २ चतुर्मास करते हैं वहाँ २ कुछ २ समझदार लोग भावना (भोजन) देने से इन्कार करते हैं क्योंकि पैर पूजना शास्त्र विरुद्ध है तथा धर्म का हिसाब नहीं बताते, अतः पैसा देना भी नहीं चाहते। हम कुछ प्रमाण पाठकों के सामने यह पेश करना चाहते हैं कि इनके कहाँ २ चतुर्मास में किन २ ने पाँव नहीं पूजे और वर्तमान समाज को इनके विषय में क्या-रूप रक्खा है ? स० १९८४ में जब कलोल में चतुर्मास किया था तब निम्न लिखित सुधार समाज के सामने पेश किये गये और उन्होंने पाँव भी नहीं पूजे।

गुजराती नक़ल हूबहू देते हैं।

इसी तरह खांदू के एक चतुर्मास में भाई छगनलाल जी पंचोरी आदि ने पाँव पुजने से इन्कार किया था। इन्दौर, जावरा आदि के भी कई भाई इनकी पूजा व नमस्कार नहीं करते।

॥ श्री ॥

कलोलना नरसिंहपुरा पंचने आपाएलुं निवेदन पत्र।

श्री कलोल नरसिंह पुरा पंच समस्त ने अमो नीचे सही-करनार कलोलना नरसिंह पुरा दि० जैन भाइओ ने नम्रतापूर्वक खुलासो छे के-हाल माँ भट्टारक जशकीर्ति जी कलोल माँ चोमासुं

रहेला छे, ते प्रसंगे चालू रूढि प्रमाणे तेमनी भावना नही करवी. घणा भाइओनो अभिप्राय हतो अने पोताना अभिप्राय प्रमाणे चालू रूढि थी भावना करवानुं मुलतवी राख्युं हतुं अने चालू रूढि थी भावना करवानुं शास्त्र सम्मत नथी एटलुंज नहि परन्तु हालना समय थी पण प्रतिकूल छे।

अमो नीचेना केटलाक फेरफार साथे भट्टारकनी भावना करवा खुशी छीए, अमारा नीचे जणावेला अभिप्रायो अमोए पंच समस्त ने प्रथम थीज जणावेला हता, छतां आजसुधी अमारी ते बाबत ऊपर जराए ध्यान नही आपता उलटूं अमो "भावना करताज नथी" एम केटलाक भाइओ मानी रह्या छे, अने पोतानो आग्रह पोषवा खातर तेवुं खोटुं वातावरण भविष्यमां फैलावे नही तेवा शुभ हेतु थी आ निवेदन आपवूं पड्युं छे।

अमो नीचेना फेरफार साथे भावना करवा खुशी छीए अमारे भट्टारक प्रथा साथे अंगत विरोध नथी।

१—हरेक भट्टारके जैनधर्मना चार अनुयोगनो अभ्यास करेलो होवो जोइए।

२— भट्टारकनी साथे नीचे प्रमाणे त्रण माणसो होवा जोइए,

(१) विद्वान पण्डित, (२) रसोइओ (३) नोकर।

३—संघजमा वधुमां वधु रु० ३।) अंके साडा त्रण रुपिया आपवा कोई पण व्यक्ति आ नियमनुं उल्लंघन करे नहि, अने भट्टारक पासे थी नाणा आदि सबंधी पंच ज्यारे त्यारे हिसाब लई शके, कारण के ते सामाजिक ताक़त छे,।

४—पैसा आपीने छोकराओंना कान श्रावकोए फुँकावा नहिं के भट्टारके फूँकवा नहि,।

५—हाल ना भट्टारकों नुं पाद—प्रक्षालन अने व्यक्ति पूजन शास्त्र विरुद्ध होवा थी ते बन्ध करवूँ।

आ विगेरे ऊपरना केटलाक फेरफारो माथे भावना करवांनी अमारी प्रथम थीज खुशी हती, तेमज हालपण खुशी छे ते अमे ममेला समस्त पंचने निवेदन करीए छीए के पंच समस्त अमारी उक्त विनती समाज हितनी खातर ध्यान मां लेवा कृपा करशो एज सं० १९८५ कार्तिकसुदी ६ ने बुधवार।

—दा. अमो छीए पंच समस्तना नम्र सेवको

१ बखारिया अमथालाल भाई चन्दनी स० दा० अम्बालाल। शा० केशवलाल नमलशीदाम नी सही दा० पोते। शा० अमथा लाल, गुलाबचन्दजा मही ईश्वरलाल। शा० मोमचन्द, अमथालाल नी सही दा० पोते। शा० चुनीलाल, वरजीवन दासनी सही दा० पोते शा० डाह्यालाल व्रजलाल नी सही दा० आत्माराम बखारिया मफत लाल मगन लाल नी सही दा० पोते आदि—

सं० १९८२ व १९८६ दोनों वक्त में जब भींडर में चतुर्मास किया था तब श्रीमान् सेठ ऋषभदास जी बोरा उंठाला ने पैर नहीं पूजने पर इन्होंने भोजन नहीं किया था और इस वर्ष भी सं० १९९८ में आपका चतुर्मास भींडर में होरहा है कितने ही गृहस्थों की पैर पूजने की इच्छा नहीं होते हुवे भी जाति दबाव से जबरदस्ती पाँव पूजा कराते हैं फिर भी यहाँ के चतुर्मास मे

कुछ विशेषताएँ हुई हैं उसको हम पाठकों के सामने सत्य २ रखते हैं जिससे पाठक भले भाँति अनुमान लगा सकते हैं। इनके प्रति वर्तमान में लोगों की कैसी भावना है जो पर्चे निकले थे उनकी नक़ल देरहे हैं।

॥ श्री ॥

शुभ काममें आपत्तिसे ठहरो मत डरो। पत्र फाड़ना महा पाप है।

अपील !

श्री नरसिंह पुरा दि० जैन युवक संघ भींडर

(१) भाइयो आँख खोलो, जमाने की रफ्तार देखो गाढ़ी कमाई के पैसे का दुरुपयोग मत करो ?

(२) जब तक भट्टारक जी अपनी निज सम्पत्ति नरसिंह पुरा दिगम्बर पंचों के नाम से रजिस्ट्री न करादेवें और आमद-खर्च का हिसाब न रक्खें तब तक रोकड़ पैसा बिल्कुल मत दो ! मत दो ! मत दो '

(३) जब तक यह कार्य न हो और पैसे दिये जाँय तो पञ्च भट्टारक फण्ड के नाम से अलग जमा करें।

(४) भाइयो जागो देश मे क्या हो रहा है यह समय ऐशो आराम मे सोने का नहीं है, देश देश मे चहुँ ओर लड़ाई होरही है। अकाल पड़ रहा है, दीन दुःखियों का होश ठिकाने नहीं है और भी कई दैवी आपत्तिएँ धर्म व जाति पर आती

जारही हैं, हाय क्या होगा ? पैसे की आमद का भाइयो कोई जरिया नहीं नजर आता, सोचो व समझो और पैसे का सदुपयोग करो ।

आपका
जाति-हितैषी

कविता नं० १

[तर्ज—अंधेरी है रात, सजन रहियो के जइयो ।]

भट्टारक बन पैर पुजाने, शास्त्र तो समझाइयो ।
सम्यक्त्व श्रद्धा व्रत संयम नहीं है, ।।
भक्ति करानी हो तो, जरा मुनि बन जइयो ।
व्रत प्रतिमा कुछ भी नियम नहीं है,
नमस्कार कराना हो तो मुनि बन जइयो ।।
परिग्रह रक्खें, शान दिखावें ।।
पूजन कराना हो तो जरा मुनि बन जइयो ।।
इस ही पद में रहना चाहो ।
पैसे लेने हो तो जरा हिसाब तो समझइयो ।।

कविता नं० २

अरी भट्टारक रे सम्पति कितनी, खबर वे तो कह दो ।
खाने पाँच पच्चीस पचासों देते, खबर वे तो कह दो ।।
देव शास्त्र की श्रद्धा नहीं हैं, सम्यक्त्व वे तो कह दो ।
ये गुरु होने का दावा रखते, व्रत प्रतिमा हो तो कह दो ।।

कविता नं० ३

पैसा रही पुकारें मन में,

जोरे धर्म ध्यान नहीं मन में।

मूँड मुँडा कर पहन लँगोटी॥

चद्दर मोह वाँरे मन में॥ १॥

व्रत सामायिक संयम नहीं जिनके।

तो राग द्वेष रहे तन में॥ २॥

श्रावक जन से करे याचना।

गृद्धता रहे अति धन में॥ ३॥

धन संचय में ही रहे हमेशा।

तो त्याग धर्म नहीं मन में॥ ४॥

व्रत संज्ञा चारित्र नहीं है।

सम्यक्त्व जरा नहीं उनमें॥ ५॥

अधो गति का डर नहीं जिनको।

तो पूजन करावे चरणन में॥ ६॥

पंडितों के लिये विचारणीय

उन्नति अवनति पुरुष का, है रसना के हाथ।
बिन विचार तातें वचन, कभी न बोलो भ्रात॥ १॥
सोच समझ कर तत्व को, बोलो वचन विचार।
नहीं तो कुछ हो जायगा, वृथा करोगे रुवार॥ २॥
प्रश्न करना बन्द किया, निर्भय हो गये आप।
होना जाना कुछ नहीं, पछताओगे आप॥ ३॥
जगमें सब से कामता, जानो बोल अमोल।

उपमा किसकी दीजिये, इसका तोल अतोल ॥ ४ ॥
सभा अध्य निर्भय सुथिर, भाखे तत्व विचार,
वाचस्पति वादी वही, जग जेता सरदार ॥ ५ ॥

तुम्हारा
हितैषी :

जाति हित इनने नहीं कीना, और न आत्म- चितवन करते हैं।
धर्म गुरु का भेस बनाकर परिग्रह संग्रह करते हैं ॥ १ ॥
स्वपर का उपकार न कीना, नाम भट्टारक धरते हैं।
अपने आप अचारज बनकर, मनमानी क्रिया करते हैं ॥ २ ॥
नाम मात्र को साधु बनकर, शाही ठाठ दिखाते हैं।
बैठ पालकी श्रावक के घर, भोजन करने जाते हैं ॥ ३ ॥
श्रावक जन से निज चरणों की, पूजन भी करवाते हैं।
करें याचना पैसे की, कम हो तो शीश हिलाते हैं ॥ ४ ॥
दस पाँच निठल्ले ऐसे हैं, जो पंच बनकर संघ में जाते हैं।
मुट्ठी भर पतासे की एवज, हाँ में हाँ मिलाते हैं ॥ ५ ॥
मतलब सिद्ध होने पर अपना, भोजन करने जाते हैं।
जो पैसे की कमी होयतो, अनराय कर आते हैं ॥ ६ ॥
फिर श्रावक की खैर नहीं है, नीचा उन्हें दिखाते हैं।
खरी कमाई के पैसे नहीं ये यह सब को सबक सिखाते हैं ॥ ७ ॥
देव शास्त्र की श्रद्धा हो जिनके, नियम भंग करवाते हैं।
रूढ़िभक्त सभी मिलकर के मिथ्या क्रिया कराते हैं ॥ ८ ॥
जो कोई पूछे महाराज से, पैसे को क्या करते हो।
दवाव जाति का ऐसा है, जो सभी लोग यों डरते हैं ॥ ९ ॥

शास्त्र विरुद्ध कार्य जो करते नहीं किसी से डरते हैं ।
होनहार ऐसा ही है इनका, जो कार्य ऐसा ही करते हैं ॥ १० ॥
नमस्कार करना नहीं इनको, सम्यक्त्व दिल में धरते है ।
रोकड़ पैसे भी मत दो इनको, धमकी से क्यों डरते हैं ॥ ११ ॥
पाँच पच्चीस पचासों मिल, संगठन करलो शान्ति से ।
जाति उन्नति तब ही होगी, कार्य चले नहीं क्रान्ति से ॥ १२ ॥
करो योजना ऐसी भाई, फंड करो इस भाँति से ।
करो सहायता असहाय जनकी, चन्दा करो निज जाति से ॥ १३॥
रत्न त्रय की रक्षा करके, परमार्थ जो करते हैं ।
जाति इसमें क्या कहेगी, धमकी से क्यों डरते है ॥ १४ ॥

भजन

यह न समझो कि चरणों में, सर झुकायेंगे ॥
सर झुकाना तो रहा दूर, जबाँ भी न हिलायेंगे ॥ १ ॥
हमें परवाह नहीं कि, जाकर आपस करें ।
जरा डर भी नहीं कि, जाकर खातिर करें ॥ २ ॥
देख लेंगे कि क्या २ आती है आफत ।
सम्यक दर्शन बिगाड़े क्या पञ्चों की ताक़त ॥ ३ ॥
हमें जाति व पञ्चों का डर ही नहीं ।
रहे सम्यक्त्व तो गति शुभ मिलेगी कहीं ॥ ४ ॥
सच्चे गुरू के ही चरणों में सर झुकायेंगे ।
गीदड़ भभकी से क्या हम यों डर जायेंगे ॥ ५ ॥
दीन अनाथ गरीबों की खबर ही नहीं ।
ऐसे सण्डे मुसण्डों को पैसे देंगे नहीं ॥ ६ ॥

हजारों मुसीबत में हमारे भाई ।
देखो तो जाकर कि कैसे पड़े हैं ॥ ७ ॥
पर्वाह नहीं है जिनको जरासी ।
टेक्स लेनेको अपना'यों आकर खड़े हैं ॥ ८ ॥
मद्ये धर्म को भूले निज पद भी बिसारा ।
यों धरके ये बाना लीना श्रावक का सहारा ॥ ९ ॥

पाठको ! यह तो हमारे भीण्ड ग के नवयुवकों की हृदय की भावना है । यद्यपि कविता की दृष्टि से इसमें अनेक त्रुटियाँ हैं फिर भी भाव व जोश इनका अवश्य सराहनीय है ।

अब हम पाठको के सन्मुख जैन समाज के प्रसिद्ध विद्वानों का अभिमत देते हैं ।

कविरत्न गुणभद्र जी विरचित जैन भारती से "उद्धृत"

(१)

एक दिन अकलङ्क से विद्वान भट्टारक हुए ।
निज शक्ति से जो लोकमें प्रभुधर्म संचालक हुए ॥
हा ! आज भट्टारक यहाँ रखते परिग्रह भार को ।
मृगराजकी उपमा अलौकिक मिल रही मार्जारको ॥

(२)

अब नाम भट्टारक यहाँ सब कृत्य उनके नीच हैं ।
जो थे सरोवर के कमल वे होगये अब कीच हैं ॥
हा ! जान कुछ पड़ता नहीं यह कालका ही दोष है ।
अथवा हमारे धर्मपर विधिने किया अतिरोष है ॥

(३)

है धर्म रक्षक नाम पर ये धर्म भक्षक बन रहे।
संसार के आडम्बरों में यो अधिकतर सन रहे॥

हैं वस्त्र इनके देखलो रंगीन रेशम के बने।
पिच्छी कमंडलु भी अहो इनके सदा मनमोहने॥

(४)

गद्दे तथा तकिये भरे रहते सुकोमल तूलसे।
सादा नहीं आहार करते वे कभी भी भूल से॥

बस पुष्ट मिष्ट गरिष्ट ही इनका सदा आहार है।
पड़ती भयंकर रात को इन पर मदन की मार है॥

(५)

प्रत्येक भट्टारक यहाँ पर धर्मका आचार्य है।
पर धर्मके अनुरूप तो होता न कोई कार्य है॥

कितनी लिखी रहती बड़ी शुभ पट्टियां चपरासमें।
रखते परिग्रह सर्वदा संसार भरका पासमें॥

(६)

पाखण्डियों को भूपसम सामान सारा चाहिये।
भगवान प्रतिमा सामने तकिया सहारा चाहिये॥

पूजें कुदेवों को अहो निजमार्ग में श्रद्धा नहीं।
ऐसे कुगुरुओं से जगत का क्या भला होगा कहीं॥

(७)

सह ग्रंथ ये पापी बड़े निर्ग्रन्थ से पुजते यहाँ।
निज स्वार्थ साधन के लिये सब ढोंग भी रचते यहाँ ।।
परनारियों के हाथ को लेते अहो निज हाथ मे।
अवकाश पाकर बैठते एकान्त उनके साथ में ।।

(८)

मुनि धर्म का भी स्वाँग धरना प्रेम से आता इन्हे।
उल्लू बनाना श्रावकों को भी सदा भाता इन्हें ।।
निज मंत्र तंत्रों से डराना दूसरो को जानते।
हा ! धर्म के ही नामपर ये पाप कितना ठानते ।।

(९)

मेवाड़ मे हैं भक्त वागड़ मे तथा गुजरातमे।
कर बैठते प्रभु की अवज्ञा आ इन्होंकी बातमें ।।
हे श्रावको ! होते हुवे दृग तुम नहीं अंधे बनो।
आके किसी की बात मे अघ पङ्क मे मत तुम सनो ।।

(१०)

कर प्रेरणा अत्यन्त ही, .पूजा करायेंगे कभी।
निःशङ्क तब निर्माल्य अपना ही बनायेंगे सभी ।।
पूजा प्रतिष्ठा एक भी होती नहीं इनके बिना।
होती बड़े ही ठाट से इनकी मनोहर भावना।

(११)

दश पाँच नौकर तो गुरू रखते सदा ही संग मे।
हा ! हा ! रँग रहते अलौकिक, ही निराले रंग में॥
ये श्रावकों को दे सकेंगे, हाय कारागार में।
प्रभु ने इन्हे क्या दे दिया है, विश्व यह अधिकार मे।

(१२)

गिरते कुएँ मे वे स्वयं पर अन्य को लेके गिरें।
जब है यहाँ पर भक्तगण तब क्यों अकेले ही गिरें॥
अपने कुकर्मों से सहज पाताल मे ये जाँयँगे।
सहनी पड़ेगी वेदना, तबतो अधिक पछतायँगे॥

(१३)

यह वेश धरकरके तनिक, उपकार निज पर का करो।
उपदेश दे कर जातिको, अज्ञानता को तुम हरो॥
सद्धर्मकी महिमा कृपाकर, आप अब बतलाइये।
सन्मार्ग विमुखों को सहज सन्मार्ग में ले आइये॥

(१४)

अब नाम त्यागी हो न केवल, भाव त्यागी हूजिये।
निज साधुता से शीघ्रही, कल्याण जगका कीजिये॥
जिस जातिका खाते जरा, उस जाति की रक्षा करो।
यदि यह नहीं स्वीकार तो, अपनी पृथक् भिक्षा करो॥

भट्टारक प्रथा अब अनावश्यक है

समय के अनुसार प्रत्येक कार्य में परिवर्तन करना पड़ता है। इसी नियम के अनुसार जब कि एक समय में जैनधर्म के लिये दूसरे धर्म वालों के प्रति चमत्कार दिखाने की आवश्यकता पड़ी, तब निर्ग्रन्थ वीतरागी साधुओं के मार्ग को भ्रष्ट करके सन् १४०७ ई० में आचार्य प्रभाचन्द्र जी द्वारा वस्त्रधारी भट्टारक प्रथा की नींव पड़ी प्रारम्भ में इसका प्रभाव गृहस्थों पर बहुत पड़ा और अनुमान २५० वर्ष में वृद्धिगत होता हुआ चरम सीमा तक पहुँच गया। उस समय गृहस्थों की अवस्था बहुत शोचनीय थी। खैर, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब इनका चमत्कार जाता रहा। भारतवर्ष में निर्ग्रन्थ मुनिराज दृष्टिगोचर होने लगे।

अब प्रश्न यह है कि जहां २ इनका अधिकार है वहां परिवर्तन करना चाहिये। तथा इनके पास जो कुछ सम्पत्ति है उसमें विधवा आश्रम या कोई संस्था खोलना चाहिये, जिससे द्रव्य का सदुपयोग हो। ये मुनियों के भ्रष्ट रूप में रह कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। जैसी दीक्षा लेते समय नग्न रहे, भोजन के समय अन्तराय की संभावना से थाली बजती रहे, एवं अष्ट द्रव्यों से पूजनादि होती है। इसी तरह भगवान् की पालकी के बराबर इनकी चले और मंदिर में भगवानके बराबर गद्दी पर आप बैठें और भाइयों को अष्टाङ्ग नमस्कार व नमोस्तु करावें। इत्यादि क्रिया काण्ड दिखाते हुये मुनि बनेरहें सो इस मार्ग को आज कल का शिक्षित समाज तो स्वीकार कर नहीं सकता।

अतः भट्टारक प्रथा को शीघ्र उठादेना चाहिये। जो भट्टारक हैं उन्हें या तो सप्तम प्रतिमा धारन करना चाहिये या स्वधर्मी भाई बनकर किसी संस्था की सेवा करनी चाहिये। शास्त्र में भट्टारक का लक्षण यह बताया है कि "सर्व शास्त्रकलाभिज्ञो नाना गच्छाभिवर्द्धकः। महत्मना प्रभा भावी-भट्टारक इतीष्यते ॥ १ ॥ दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि आज कल के भट्टारक अधिकांश अष्टांग नमस्कार एवं स्वयं की अष्टद्रव्यों से पूजनादि कराने के सिवाय कुछ नहीं जानते।

यह प्रथा जहाँ २ भट्टारक हैं वहाँ २ जारी है अतः समाज को इस ओर लक्ष्य देना चाहिये। और ऐसी प्रथा को दूर करना चाहिये जिससे धर्म की हँसी नहीं हो।

जैन मित्र से उद्धृत

पाठक इससे समझ गये होंगे कि हर तरह से इनमें परिवर्तन होने की पूर्ण आवश्यकता है।

हम यह नहीं चाहते की भट्टारक गद्दी उठादी जाय। किन्तु हमारी तो यह हार्दिक भावना है कि यह गद्दी यावच्चन्द्र दिवाकर तक रहे और जाति की रक्षा शिक्षा का भार अपने ऊपर लेकर धर्म व समाजकी सेवा करे किन्तु उक्त कार्य तब ही सफल हो सकता है जब कि उसमें कुछ सुधार कर दिया जाय? हमारी दृष्टि में तो पं० पवनकुमार जी द्वारा पेश की गई २१ शर्तें यदि अमल में लाई जाँय तो इस जाति व गद्दी का वह कार्य

संसार के लिये अनुकरणीय होगा समाज का बहु भाग भी इन २१ बातो को पसन्द करता है हम यहाँ पर उन २१ बातों के साथ कुछ सहमत सम्मतियाँ प्रगट कर रहे हैं। हमे सम्मतियाँ लिखित रूप से लेने में यद्यपि बहुत सी अड़चनें उठानी पड़ी फिर भी हम सम्पूर्ण समाज के सामने २१ बातो की स्कीम को रखते हैं और जो कुछ भी सत्य है उसे हम समाज के सामने ज्यों का त्यों प्रगट करते हैं।

जैनमित्र अङ्क १ कार्तिक सुदी ८ वी. सं० २४६५
ता० ७ नवम्बर १६४० मे

नरसिहपुरा भाइयो से निवेदन।

वर्तमान युग मे सर्व जातिये अपनी २ उन्नति मे सरपट दौड़ लगा रही है, किन्तु दुःख है कि इस जाति के मुखियाओं का इस ओर कुछ लक्ष्य ही नहीं है।

हमारे पुरखाओं ने जाति-रक्षा व उन्नति के हेतु भट्टारकों की स्थापना की थी किन्तु दुःख है कि वे भी अपने ऐशो आराम मे संलग्न हैं, इन्ही लोगों के निमित्त से जाति मे यत्र-तत्र झगड़े हुवा करते हैं।

अतः मैं जाति हित की मनोकामना से निम्न लिखित सुधार व कर्त्तव्य पेश करता हूँ। आशा है हमारे जाति बन्धु व भट्टारक जशकीर्ति जी व भट्टारक भवन कीर्तिजी सा० विचार कर इस जाति की उन्नति में हाथ बढ़ावेंगे। तथा अपने विचार भी प्रगट करेंगे सर्व प्रान्त के नरसिह पुरा भाई भी अपने २ अभिप्राय मेरे पास भेजने की कृपा करेंगे। ऐसी प्रार्थना है।

(१) भट्टारकजी अपनी स्थावर-जंगम-संपत्ति की रजिस्ट्री नरसिंहपुरा जाति के मुखियाओं के नाम सरकार से करादेवें जिस में सर्व प्रान्त के भाइयों के नाम हों।

( ) भट्टारक जी के साथ में एक योग्य प्रभावशाली विद्वान रखना चाहिये जिसका वेतन भट्टारक फण्ड से दिया जावे।

(३) भट्टारकजी की भावना (भोजन) के दिन सम्बंधियों व मित्रों को किसी भी प्रकार की दावत (भोजन) नहीं देना चाहिये।

(४) भट्टारकजी के साथ में एक खिदमतगार नौकर व पण्डित ही रहे।

(५) शेष बचे हुए पंडितों को जाति सुधार के लिये दो, दो. की जोड़ी बनाकर भ्रमण करना चाहिये।

तथा चातुर्मास में भी इसी तरह स्वतन्त्र रह कर धर्म प्रचार करें। इनका कुल खर्चा भट्टारक फण्ड से दिया जावे तथा लोगों से किसी भी प्रकार की याचना या धार्मिक कार्य पर कोई टेक्स वसूल नहीं करना चाहिये। और अपनी मासिक रिपोर्ट भट्टारक ऑफिस में भेजते रहना चाहिये।

(६) भट्टारकजी जिस घरपर भोजन करने जावें वहां पर भोजन श्रावक ही शुद्धतापूर्वक बनावे। नौकरादि के भेजने की आवश्यकता नहीं।

(७) जिस दिन भट्टारक जी भोजन करने जावें उस दिन जो पतासे आदि बाँटने की प्रथा है उसे बन्द करना चाहिये।

(८) भट्टारक जी को भोजन के बाद जो भेंट दी जाती है वह ज्यादा से ज्यादा ४) रक्खी जावे ।

(९) भट्टारक जी को आय व्ययका पूर्ण हिसाब रखना चाहिये और वर्षके अन्त में छपवाकर वितरण करना चाहिये ।

(१०) जाति के अन्दर चलनेवाली सम्पूर्ण संस्थाओं की देख रेख इन्हीं पंडितों द्वारा कराई जावे ।

(११) एक ऐसी कमेटी बनाई जावे जो भट्टारक जी को प्रत्येक कार्य में योग्य सलाह देती रहे ।

(१२) भट्टारक आचार शास्त्र यदि हो तो उसको शीघ्र प्रकाश में लाया जावे नहीं होने पर उनको सप्तम प्रतिमा के व्रत पालने को बाध्य किया जावे ।

(१३) भट्टारक फण्ड से खर्चे के बाद बची हुई आमदनी से स्कालरशीप फण्ड, बिधवा सहायक फण्ड, पाठशाला स्थापन असमर्थ सहायक फण्ड आदि जात्युन्नति के कार्य किये जावें ।

(१४) उक्त नियम नं० १३ के अनुसार कार्य करने पर उसको और भी उन्नत बनाने के लिये व कमी होने पर पूर्ति के हेतु प्रत्येक घर के पीछे प्रति वर्ष एक रुपया १) वसूल किया जावे ।

(१५) नरसिंह पुरा जाति का पूर्ण इतिहास पंडितों द्वारा खोज पूर्वक लिखवा कर शीघ्र प्रकाश में लाया जावे ।

(१६) नरसिंहपुरा जाति की जनगणना पाँचवें वर्ष बराबर होती रहनी चाहिये ।

(१७] यदि कोई श्रावक अपने घर पर बुलाने में किसी कारण से असमर्थ हो तो ७) सात रुपये नक़द देवे।

(१८) किसी भी प्रकार का नशा व व्यसन करनेवाला आदमी इनके साथ में न रक्खा जावे।

(१९) लवाजमा आदि जो भट्टारक जी के साथ में रहता है यदि उनकी कोई सरकारी परवानगी होवे तो उसको सुरक्षित रखते हुवे उनकी नकलें छपवा कर वितरण करना चाहिये।

(२०) भट्टारकजी के साथ में जो सरस्वती भवन व औषधालय है उसको और भी उन्नत बनाते हुवे सारी जाति में लाभ हो ऐसी व्यवस्था करें।

भट्टारक जी का जो पुराना नामा है उस को भी शीघ्र जाँचकर प्रकाश में लाना चाहिये।

मैं भट्टारक संस्था का विरोधी नहीं हूँ किन्तु उसमें सुधार और उन्नति की आवश्यकता है। अतः यह निवेदन किया गया है आशा है हमारे भाई भी विचार कर मेरे पास अपनी सम्मति भेजेंगे। तथा दोनों भट्टारकजी सा० उदारता पूर्वक विचार कर स्वपर कल्याण करेंगे।

पवनकुमार जैन

कुराबड़ पो० उदयपुर (मेवाड़)

सम्मतियाँ-

नरसिंहपुरा समाज ध्यान दे

पं० पवन कुमारजी ने जो 'जैन मित्र में' भट्टारकजी महाराज के विषयमें लिखा है सो बिल्कुल ठीक है। लेकिन मेरी राय है कि जहाँ तक कुल नरसिंह पुरा जाति सम्मिलित न हो वहां तक पं० पवन कुमार जी की लिखी हुई बातों का कार्य रूप में परिणित होना असम्भवसा समझता हूँ इसलिये नरसिंह पुरा भाइयों को जहां तक हो इस विषय का जल्दी प्रयत्न करना चाहिये।

छगनलाल जैन खान्दू पो० बाँसवाड़ा

(२)

मेरी भी बहुत दिन से यही हार्दिक भावना है कि हमारी जाति की उन्नति हो तथा उसके अन्दर होने वाले ढोंगी आडम्बर दूर हों! किन्तु इस लेख के पढ़ने से मेरा उत्साह और भी बढ़ गया ये २१ बातें बहुत ही उपयोगी हैं,

किन्तु इसमें भी कुछ सुधारने की आवश्यकता है। इन २१ बातोंको पढ़करनरसिंहपुरा भाइयो को अपना अभिमत प्रकट करना चाहिये। एक समय वह था कि भट्टारकजी हम लोगों को शास्त्री तक नहीं पढ़ने देते थे, कारण कि कहीं हमसे सामना नहीं कर बैठें, किन्तु अधुना यह बात नहीं हैं। अनेक विद्यालय, महाविद्यालय हैं। अब इनकी ढपोल खिचड़ी पक नहीं सकती। अन्त में भट्टारकजी व नरसिंहपुरा भाइयों से नम्र निवेदन है कि कुम्भकर्ण निद्रा तथा बेगो-आराम को त्याग कर इन २१ बातों पर ध्यान देते हुए अपना अभिमत प्रकट करें, तथा आज कल

की हवा के अनुकूल प्रवृत्ति करें। गुजरात एवं बागड़ प्रान्त के नरसिंहपुरा भाइ भी अपना २ अभिमत प्रकट करें। पं० पवन कुमारजी से भी यही निवेदन है कि आप किसी तरह की चिन्ता न करें। अपने काम में तल्लीन रहें। मैं भी अवश्य इस काम में सहायता दूंगा।

i. k.

हम निम्न लिखित हस्ताक्षर वाले भी आत्मोन्नति की पं० पवन कुमार जी द्वारा लिखी गई २१ बातों से पूर्ण सहमत हैं। यदि इस पर भट्टारक जी व दि० जैन नरसिंहपुरा समाज ध्यान देगी तो अवश्य जाति को लाभ होगा।

पं० कनककीर्ति वैद्य विशारद व जैनशास्त्री प्रधानाध्यापक
C/o. श्री दिवाली व्हेन दि० जैन श्राविकाश्रम जाम्बूड़ी
गुजरात पो० हिम्मतनगर

पं० पन्नालाल जैन रामगढ़वाला हा० मु० बालिसेणा गुजरात
द० हीरालाल जैन मऊडा वाला
C/o श्री दि० जैन पाठशाला रामगढ़

पं० कनकप्रभ जैन विशारद टेलर मास्टर जाम्बूडा वा०
द० फतेलाल जैन लिखमावत भीण्डर
द० भँवरलाल जैन धरमावत मु० मऊड़ा
द० माधौलाल जैन गणपत्तोत भीण्डर
द० हीरालाल पचोरी "
द० भँवरलाल लिखमावत "
द० मदनलाल जेतावत मु० बोहेड़ा

द० महावीरप्रसाद जैन विशारद भीण्डर

पं० शान्तिलाल जैन विशारद मु० भीण्डर हाल अध्यापक दि०

जैन पाठशाला बीर (अजमेर)

द० फतहलाल पञ्चोरी भीण्डर

द० नाथुलाल लिखमावत "

द० छगनलाल सुरावत मु० मऊड़ा

द० मथुरालाल धर्मावत "

द० गवीलाल जैन "

द० शंकरलाल जैन वत्तर वाड़ा

द० किस्तूरचन्द जैन भूलावत भीण्डर

द० मोहनलाल जैन फांदोत "

द० गोरधनलाल जैन जेतावत अहलमद फौजदारी

c/o ठिकाना भीण्डर

द० फूलचन्द जैन हाथीरामोत नानेद्र ठि० भीण्डर

द० जसूलाल जैन जेतावत भीण्डर

द० उदयलाल हाथीरामोत "

द० भँवरलाल जैन फांदोत "

द० मदनलाल जैन भुलावत "

द० मदनलाल जैन लिखमावत भींडर

द० गोतमलाल जैन कूण

द० जीतमल जैन हाथीरामोत भींडर

द० कन्हैयालाल पंचोरी मु० ,,

द० पं० भँवरलाल जैन बालावत विशारद मु० कुरावड़
द० वरदी चन्द जैन बोरा मु० अकोदड़ा
द० बसन्तीलाल जैन मन्दसौर
द० भूरालाल जैन बालावत कुरावड़
द० चम्पालाल डूंगरूर्या मु० कुरावड़
द० हुकमचन्द जैन कूण
द० शेषमल जैन ,,
द० भगवानलाल जैन कूण
द० वरजलाल बालावत मु० कुरावड़
द० भँवर लाल जैन ठाकुरड्या ,,
द० इन्द्रलाल जैन डूंगरूर्या ,,
द० छोगा लाल ठाकरड्या ,,
द० शंकरलाल जैन मु० जाम्बूड़ा
द० झमकलाल जैन मु० जाम्बूडा
द० शंकरलाल जैन नामेदार ठिकाना बानसी
द० राजमल लिखमावत अमीन सेटलमेन्ट खालसा उदयपुर
द० बहोतलाल जैन दाणी भादावत ऊँठाला
द० बसन्तीलाल जैन फौदोत भींडर
द० शालिगराम जैन बालावत
द० भगवतीलाल जैन पाणुन्द
द० भँवरलाल जैन साकरोदा
द० अम्बालाल जैन लूणावत मु० कूण

द० शंकरलाल जैन केरोत मु० लूँणदा
द० कालूलाल जैन बोरा खान्दू
द० शंकरलाल जैन धुलेव
द० माँगीलाल जैन भींडर
द० बहोतलाल धर्मावत मऊड़ा
द० हीरालाल जैन मऊड़ा
द० मथुरालाल जैन बालावत मु० कुराबड़
द० इन्द्रलाल जैन भींडर
द० शोभागमल भादावत मु० भींडर
द० मोतीलाल भादावत मु० ऊँठाला
द० मोहनलाल जैन फांदोत छोटा मु० भींडर
द० कन्हैयालालजैन मु० जाम्बूड़ा
द० शान्तिलाल कीकावत मु० नारावट

इनके अलावा और भी बहुत सी मौखिक सम्मत्तियाँ हमारे पास आई हैं और उन लोगों ने इन २१ बातो को भूरि २ प्रशंसा भी की है।

कितने ही वृद्ध पुरुषों तथा बहिनो व मातात्र्यों ने भी इन इक्कीस बातों को बहुत ही उपयोगी कहकर अपनी स्वीकृति के अभिमत प्रकट किये हैं। हमने वृद्ध पुरुषों से व माताओं से भी अपनी स्वीकृति के सूचक हस्ताक्षर माँगे किन्तु माताओं ने तो नहीं पढ़ी होने के कारण हस्ताक्षर करने की असमर्थता प्रगट की।

वृद्ध पुरुषों ने यह आज्ञा दी कि हमारे हस्ताक्षरों से दो दल होने की सम्भावना है अतः हमारा यहाँ पर हस्ताक्षर करना उपयुक्त नहीं है किन्तु हम इन २१ बातों का कभी भी विरोध नहीं करेंगे किन्तु जहाँ तक होगा हम वैसी ही कोशीश करेंगे जिसमे यह जाति उन्नति के शिखर पर चढ़े।

अन्तिम वक्तव्य ।

अब हम अपना अन्तिम वक्तव्य देकर यहां ही लेख को समाप्त करते हैं कि हमें इस बातका दुःख है कि हम मेवाड़ प्रान्तके सिवाय अन्य प्रान्तवालो की उतनी अधिक सम्मत्तियाँ नहीं प्राप्त कर सके किन्तु जो कुछ भी प्राप्त हुई सम्मतियाँ हैं ये इस कार्य को सिद्ध करने में कम नहीं हैं। हमारी व हमारे मण्डल की यह मनो-कामना नहीं है कि हम जाति के अन्दर झगड़ा या बखेड़ा करें किन्तु शान्ति से जाति की उन्नति हो ऐसी भावना है।

कुछ लोग इतने उग्र हैं कि वे एक दम ही किसी भी कार्य को उठाकर तुरंत ही फल चखना चाहते है। उनसे हमारी यह प्रार्थना है कि वे किसी भी प्रकार का पर्चा न निकालें जिससे भट्टारक जी महाराज को व जाति को अशान्ति पैदा हो किन्तु नम्रता के साथ अपनी प्रार्थना इनके कानों तक पहुँचाना कोई बुरा नहीं है।

समाज की कुल परिस्थिति अब आपके सामने मौजूद है आपही अब इसका निर्णय कर लेवें। जाति के आबाल वृद्ध

जब ये चाहते हैं कि हमारी जाति की उन्नति हो तो फिर भट्टारक जी महाराज व अन्य कुछ महाशय विरोध कर रहे हैं। इनमें उनका क्या अभिप्राय है सो हम नहीं सोच सकते।

हम जहां तक सोचते हैं भट्टारक जी महाराज व अन्य व्यक्तियों की भी यह इच्छा नहीं है कि वे जाति की उन्नति को नहीं चाहते हों। अथवा जाति को अवनति के गड्ढे में गिराना चाहते हों, यह भी नहीं।

हमारी तो यह राय है कि इन इक्कीस बातों पर विचार करने पर जो २ झगड़े यत्र तत्र होते है वे शान्त हो जायँगे। जाति व गद्दी का जीवन और भी बढ़ जायगा। अन्यथा जैसी भी कुछ दशा होगी वह आपसे अज्ञात नहीं है।

यदि हमारे इतने से लिखने से किसी को कष्ट हुआ हो तो वे क्षमा करें।

हम भट्टारक जी महाराज से भी निवेदन करते हैं कि वे दीर्घदर्शी विद्वान् हैं। अतः इन इक्कीस बातों के स्वीकार में कभी भी आगा पीछा नहीं सोचेंगे।

साथ में उन पण्डित महाशयों से भी प्रार्थना है शान्ति के साथ महाराज को ऐसी ही सलाह देवें। जिससे की उन्नति हो।

यदि अन्य कोई भाई व भट्टारक जी महाराज कोई उपाय या स्कीम बतायेंगे जिससे ये होने वाले झग